मौर्यकाल में पर्यावरण एवं वन्यजीव संरक्षण

Dr. Vijay Kumar
Asst. Professor – Ancient History
I.S.S.S.S. Government Degree College,
Pachwas, Basti (U.P.)

2.1 **'क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा, पंच रचित अति अधम सरीरा।'** पंचतत्व – अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी, आकाश के साथ ग्रह–नक्षत्र, नदियां, तालाबों, पर्वत, पेड़–पौधों, जीव–जन्तुओं सभी के संरक्षण हेतु, इनमें ईश्वरीय सत्ता को स्वीकारते हुए उनके प्रति आदर सम्मान की भावना प्राचीन समय से ही रक्खी गयी है।

2.2 वेदों में प्रर्यावरण संतुलन के महत्व को प्रतिपादित किया गया है– ' अग्ने। सूनवे पिता इव नः स्वस्तये आ सचस्व ' – **ऋग्वेद** के प्रथम मंत्र में ही अग्नि को पिता के समान कल्याणकारी कहा गया।' अप्सु अन्तः अमृतं, अप्सु भेषजं ' जल में अमृत है, जल में औषधि है। **यजुर्वेद** में यज्ञ का स्वरूप ही वायुमंडल को शुद्ध कर रोगों और महामारियों से बचाव हेतु महत्वपूर्ण है। **आयुर्वेद** में आयुर्वेदिक चिकित्सा में पर्यावरण की महत्ता एवं उसकी रक्षा के साथ ही **सामवेद** के गान में प्रकृति का व्यापक चित्रण है।

2.3 **बौद्ध परम्परा** में बर्षावास का विधान पर्यावरण संरक्षण का अनूठा उदाहरण है। तथागत बुद्ध प्राकृतिक चिकित्सा के जन्मदाता है।

2.4 **रामायण एवं महाभारत** में प्रकृति के सजीव–निर्जीव दोनों को चेतना सम्पन्न बताते हुए पग–पग पर पर्यावरण संरक्षण की बात कही गयी है।

3.1 **आवश्यकता अविष्कार की जननी** होती है। पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता प्राचीन समय से ही बनी रही है। 323 ई0पू0 में स्थापित मौर्य साम्राज्य के उत्तर पश्चिम में हिन्दु कुश पर्वत इसे शेष मध्य पूर्व से अलग करते थें। इसके फलस्वरूप बनने वाले यहॉ के मानसून चक्र के प्रभाव में अधिक वर्षा से **बार–बार बाढ़ तथा सर्दियों में सूखा** पड़ता रहता था। इसलिए मौर्य शासकों ने पर्यावरण एवं वन्य जीव संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया। चन्द्रगुप्त मौर्य का राजपद का त्याग सूखे के कारण ही हुआ था।

3.2 चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने शासनकाल में गुजरात के सौराष्ट्र प्रान्त में गिरनार पहाड़ी के मध्य **सुर्दशन झील** का निर्माण करवाकर प्राकृतिक संसाधनों के दोहन एवं संरक्षण की मिसाल कायम की। मौर्य सम्राट अशोक के समय में इसका पुर्ननिर्माण हुआ।

3.3 चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रधानमंत्री आर्चाय चाणक्य ने अपने ग्रन्थ **अर्थशास्त्र** में प्रकृति एवं पर्यावरण की सुरक्षा को राज्य प्रशासन के लिए अनिवार्य मानते हुए राज्य को पर्यावरणीय समस्यायों यथा– आग, बाढ़, अकाल, महामारी इत्यादि से बचाने की सलाह दी ।

4.1 मौर्यकालीन उच्चाधिकारियों में **आटविक** पद था। आटविक वन विभाग का प्रमुख था। वन राज्य की सम्पत्ति होते थे जो दो प्रकार के थे– हस्तिवन तथा द्रव्यवन।

4.2 **कुप्याध्यक्ष** औषधि संबंधी उपयोगी वनों की रक्षा, उनके द्रव्यों को एकत्र कर कारखानों तक भेजने का दायित्व निभाता था। **कुप्यगृहाध्यक्ष** का कार्य वनों से प्राप्त द्रव्य, औषधि आदि को सुरक्षित रखना था। कुप्याध्यक्ष के अधीन **वनपाल, नागवनाध्यक्ष, वृक्ष मर्मज्ञ, वन चरक (वनवासी)** जैसे अधिकारी–कर्मचारी नियुक्त किये जाते थे।

4.3 **आकाराध्यक्ष** खानों का अध्यक्ष बनाया गया। **विवीताध्यक्ष** चरागाहों का अध्यक्ष था जो गोचर–भूमि का प्रबन्धन करता था। **गौध्यक्ष** गायों सहित अन्य उपयोगी पशुओं का प्रबन्धक था। **अश्वाध्यक्ष** व **हस्ताध्यक्ष** क्रमशः घोड़ो व हाथियों के संरक्षण से संबंधित थे। **सूनाध्यक्ष** बूचड़खाने (राजकीय पशुवधशाला का अध्यक्ष) का अध्यक्ष था।

5.1 सम्राट अशोक के तीसरी शताब्दी ई0पू0 के शिलालेख स्पष्ट रूप से पर्यावरण क्षरण और पशु संरक्षण व पशु क्रूरता के खिलाफ पहली बार संवैधानिक अधिकार प्रदान करते हैं। अशोक के **पंचम स्तम्भ लेख** में पशु–पंक्षियों के संरक्षण की घोषणा की साथ ही व्यर्थ में जानवरों की हत्या पर प्रतिबन्ध लगाकर वन्य जीव संरक्षण का कार्य किया। पशुओं को दागने की प्रथा को भी अशोक ने नियंत्रित किया।

5.2 **सातवें स्तम्भ लेख** में सम्राट अशोक ने मार्गो में वृक्ष लगावाने का निर्देश देकर पर्यावरण संरक्षण का अनुपम कार्य किया। सभी प्रान्तीय राज्यों में लाभ दायक जड़ी–बूटियों को रोपित करवाया। एवं जंगलों को न जलाने का निर्देश दिया।

5.3 **द्वितीय शिलालेख** के अनुसार अशोक ने पशु चिकित्सालय खुलवाने का कार्य किया। मौर्यकाल में अभ्यारण्य की अवधारणा थी जिसके अर्न्तगत मृग, गैंडा, भैसा आदि पशु तथा मोर जैसे पंछी एवं मंछलियों को संरक्षित जीव माना गया था।

6.1 मौर्यकालीन कलाकृतियों में, अशोक स्तम्भों में (सिंह, वृषभ, गज, अश्व, कमल) पर्यावरण के प्रति सकारात्मक संवेदना का रूप स्पष्टतः दिखायी देता है। वर्ष 1992 ई0 में भारत सरकार द्वारा हाथियों के संरक्षण हेतु चलायी गयी परियोजना **'गजेतम'** का प्राकृत–पालि शब्द सम्राट अशोक के कालसी शिलालेख से लिया गया।

6.2 "India has a rich history and tradition of wildlife conservation. While Chandragupta Maurya was a great patron of conservation, his minister Kautilya had not only authored detailed **procedures of wildlife conservation**, but had also prescribed severe **penalty provisions** for those found guilty of cruelty to animals, Wildlife conservation, particularly protection of **elephants**, in India dates back to fourth century BC during the time of Kautilya and Chandragupta Maurya

During Ashoka's time, the focus was on a **clean environment**, and burning of farm chaff after harvest was banned"

- Bruce Rich , US-based environmental attorney and author. Eastern Himalayan Naturenomics Forum convention organised by the Balipara Foundation.

thank you